वाणिज्य शिक्षण TEACHING OF COMMERCE

→ प्रश्न : वाणिज्य शिक्षा से आप क्या समझते हैं? वाणिज्य शिक्षा की प्रकृति को समझाइए।

⇒ उत्तर : वाणिज्य शिक्षा का अर्थ

वाणिज्य शब्द अंग्रेजी के Business शब्द का पर्यायवाची शब्द है इसके अन्तर्गत व्यवसाय, औद्योगिक उत्पादन के प्रबन्ध एवं वितरण आते हैं। वाणिज्य एक व्यापक शब्द है, जिसके अन्तर्गत हर प्रकार का व्यापार तथा इससे सम्बन्धित सहायक सेवाएं- यातायात एवं संचार के साधन, बीमा, डाकघर, बैंक, उत्पादन केन्द्र, बिक्री केन्द्र तथा मण्डियाँ आती हैं, परन्तु इसके अन्तर्गत मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले व्यवसाय - अध्यापक, डॉक्टर, नर्स, वकील, जज, पुलिस, सेना, इन्जीनियर नहीं आते। इस प्रकार वाणिज्य क्षेत्र में आने वाले व्यावसायिक विषयों के पढ़ाने की व्यवसाय शिक्षा - COMMERCE EDUCATION कहा जाता है। महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में इसे व्यावसायिक प्रशासन नाम दिया जाता है। जब अध्यापकों को व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है, तब इसे व्यावसायिक शिक्षक शिक्षा के नाम से जाना जाता है।

वाणिज्य शिक्षा को अनेक विद्वानों ने अपने अपने मतानुसार परिभाषित किया है उनमें से कुछ परिभाषाऐं नीचे दी जा रही हैं।

⇒ हैरिक के शब्दों में, "वाणिज्य शिक्षा का वह रूप है, जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से व्यापार को उसके कार्यों के लिए तैयार करे।"

⇒ लापन के अनुसार, "वह शिक्षा जो व्यापारी के पास है और जो उसको अधिक उपयुक्त व्यापारी बनाती है, उसके लिए वाणिज्य शिक्षा है, चाहे वह विद्यालय की चारदीवारी में प्राप्त की गई हो या नहीं।"

⇒ लामेन्स के अनुसार, "वाणिज्य शिक्षा मुख्य रूप से आर्थिक शिक्षा का कार्यक्रम है, जो धन को उपलब्ध, संचित और उसको व्यय करने से सम्बन्धित है।"

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

⟹ निकोलास के अनुसार, " वाणिज्य शिक्षा एक प्रकार का प्रशिक्षण है, जो अपने प्राथमिक उद्देश्यों के रूप में व्यक्तियों को व्यावसायिक धन्धों में प्रवेश के लिए तैयार ~~कार~~ करता है।"

वाणिज्य शिक्षा की प्रकृति

वाणिज्य शिक्षा के आरम्भिक स्वरूप और आज की वाणिज्य शिक्षा की तुलना की जाए तो बहुत अन्तर दिखाई देता है। इसे स्पष्ट रूप से समझने के लिए इसकी पृष्ठभूमि का अध्ययन करना आवश्यक है।

संयुक्त राज्य अमेरिका पहला देश है, जिसने पुस्तपालन के महत्व को समझकर वाणिज्य शिक्षा का अध्ययन आरम्भ किया। धीरे-धीरे इसका महत्व बढ़ने लगा और 1600 ई. में मध्य औपनिवेशिक विद्यालयों ने अपनी पाठ्यचर्या में बहीखाता और व्यावसायिक गणित को शामिल किया। अमेरिका के गृह युद्ध के बाद पुस्तपालकों की बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए अनेक प्रकार के व्यावसायिक विद्यालय खोले गये। इन विद्यालयों में आशुलिपि, टंकण, व्यावसायिक गणित और व्यावसायिक नियम एवं बहीखाता आदि जैसे विषयों का शिक्षण दिया गया। इस प्रकार वाणिज्य शिक्षा का महत्व बढ़ता गया। भारत भी इससे अछूता नहीं रहा।

स्वतन्त्रता के बाद विश्व के साथ-साथ भारत में भी राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन आए। आर्थिक परिवर्तनों के साथ व्यावसायिक प्रक्रियाएँ भी जटिल हो गईं। इन जटिल क्रियाओं को सम्पन्न करने के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता अनुभव की गई। जरा अपने चारों ओर देखिये आज हम उन वस्तुओं का प्रयोग कर रहे हैं, जिनका उत्पादन न होकर बड़ा हो गया है, छोटी इकाइयों का स्थान बड़ी इकाइयों या संयुक्त पूंजी वाली कम्पनियों ने ले लिया है। इस सबके कारण व्यवसाय का स्वरूप बदल गया है। इसलिये आधुनिक युग में शैक्षिक कार्यक्रम में वाणिज्य शिक्षा का महत्व बढ़ गया है। इसके फलस्वरूप वाणिज्य

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

शिक्षा की प्रकृति में भी अन्तर आ गया है। अब वाणिज्य शिक्षा की प्रकृति है।

1. वाणिज्य शिक्षा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से व्यापारियों को अनेक कार्य करने के योग्य बनाती है।
2. वाणिज्य शिक्षा का कार्य व्यक्तियों में उन कौशलों का विकास करना है, जो विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में कार्य ~~काम~~ करने की क्षमता बढ़ाएं।
3. वाणिज्य शिक्षा उत्पादकों और उपभोक्ताओं को जोड़ने में सहायक सिद्ध होती है।
4. वाणिज्य शिक्षा द्वारा धन कमाने, संचय करने और व्यय करने का ज्ञान दिया जाता है।
5. वाणिज्य शिक्षा आर्थिक एवं व्यावसायिक समस्याओं को समझने और उनके समाधान ढूंढने में सहाय सिद्ध होती है।
6. वाणिज्य शिक्षा द्वारा उपभोक्ता सूचना, व्यक्तिगत वाणिज्यिक मामले तथा वाणिज्य से ~~की~~ सम्बन्धित क्षमता का विकास किया जाता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner